अध्याय प्रथम

प्रस्तावना :-

जब पवित्र या धार्मिक शब्दों का प्रयोग एक विशेषण के रूप में किया जाता है तब यह विभिन्न सांस्कृतिक गुणों को प्रकट करता है। पवित्र स्थल अतीत और वर्तमान के विभिन्न संस्कृतियों,धारणाओंऔर विश्वासों परआधारित है। साथ ही लोगों का अपने पवित्र स्थल को लेकर असीम श्रद्धा और विश्वास मुख्य बिन्दु है। पवित्र स्थल अदृश्य तथा अलौकिक सत्ता के अस्तित्वके साथ मानव के संबंधो को प्रदर्शित करता है। यह कहीं न कहीं आत्माओं, पूर्वजों और दैवीय एवं जादुई शक्तियों से संबंधित है।

देखा जाय तो पवित्रता धार्मिक दृष्टि से एक एमिक परिप्रेक्ष्य है। जिसके अंतर्गत किसी भी सामुदायिक समाज की संरचना का मुख्य आधार सांस्कृतिक संग्रहण (जो समुदाय के विचारों एवं प्रथाओं का मुख्य केंद्र है।) जो पवित्र स्थल के उद्भव का मुख्य कारण है।

आध्यात्मिक उद्देश्य से किसी भी वस्तु को पवित्र माना जा सकता है-जैसे पेड़,वस्तु, चिन्ह,प्रतीक जो देवी देवताओं की पूजा सेवा के रूप में उपयोग किया जाता है। एमिल दुर्खिम (1915)[1],ने सर्वप्रथम धर्म के संदर्भ में पवित्रता की धारणा का विस्तृत वर्णन-विवेचना किया हैं।दुर्खिमने कहा, ‘‘पवित्र वस्तुए सामाजिक व्यवस्था की प्रतीक होती है। कोई भी वस्तु चाहे वह लकड़ी या पत्थर का टुकड़ा हो या कोई मूर्ति हो, अपने आप में पवित्र नहीं होती बल्कि यह समाज है जो उसमें पवित्रता की भावना को आरोपित करता है। अतः वह वस्तु समाज का प्रतीक है।’’दुर्खिमके अनुसार,पवित्र क्षेत्र का इस प्रकार का सीमांकन ही सभीधर्मो का मूल है।

[1] Durkheim, J. W. Swain.(Jun1916).The Elementary Forms Of The Religious Life By Émile. Published By: University Of Chicago Press

मैक्स वेबर(1946)[2]ने पवित्र की धारणाओं को धर्म के विभिन्न रूपों के साथ जोड़ा है। जहां एक ओर 'आदिम' धर्मो (हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम) में इसे कुछ वस्तुओं,देवी-देवताओं और व्यक्तियों तक ही सीमित रखा गया है।

एल.पी विद्यार्थी[3], नेअपनी पुस्तक "सेक्रेड कॉम्प्लेक्स इन हिन्दू गया (1961)" में पवित्र-संकुल की अवधारणा का विकास किया है। पवित्र-संकुल को उन्होनें तीन विश्लेषणात्मक अवधारणाओं पवित्र भूगोल, पवित्र विशेषज्ञ, पवित्र अनुष्ठान जो मिलकर पवित्र-संकुल का निर्माण करते हैं। उन्होनें इस अध्ययन में राबर्ट रेडफ़ील्ड द्वारा प्रतिपादित साधारण परंपरा तथा महान परंपरा एवं लोक-नगरीय सातत्य की अवधारणा का भी परीक्षण किया है।

उन्होनें मिल्टन सिंगर द्वारा विकसित संस्कृति केंद्र, सांस्कृतिक क्रियान्वयन, सांस्कृतिक विशेषज्ञ तथा सांस्कृतिक माध्यम अवधारणा की जांच भी की है।

पवित्र भूगोल के अन्तर्गत उन्होनें, गया के पवित्र केन्द्र तथा स्थानों का उल्लेख किया है कि किस प्रकार लोग भूमि के कुछ खंडो को पवित्र केन्द्र तथा पवित्र स्थान मानतें हैं। पवित्र अनुष्ठान के अन्तर्गत उन्होने 'गया' स्थित विभिन्न पवित्र केन्द्रों तथा स्थलों में होने वाली पूजा-अर्चना की चर्चा की है। किस प्रकार भारत के विभिन्न भागों से हिन्दू विभिन्न अवसरों पर'गया'आकर पवित्र अनुष्ठान यानी पूजा-पाठ करते हैं। उन्हे विशेषज्ञों द्वारा ही पवित्र अनुष्ठान संपन्न कराए जाते हैं। पवित्र केंद्र के यहपूजारी समय-समय पर अपने यजमान के गांव जाकर दान-दक्षिणा संग्रह करते हैं तथा अपने यजमानों का आतिथ्य स्वीकार करते हैं। पुजारियों के यजमान संपूर्ण भारत में बिखरे होते हैं। उन्होने गया के 'पवित्र-संकुल' पर लिखित अपनी पुस्तक में 'गया'केपवित्र विशेषज्ञों की जीवन शैली का उल्लेख भी किया है।

[2]Weber ,Max. (1946).Essays in sociology. New York : Oxford university press

[3] http://www.ebay.com/itm/The-sacred-complex-in-Hindu-Gaya-L-P-Vidyarthi-1961-ID-00427-/301664872084/accessed on 12/7/2015

1.1पवित्र संकुल की अवधारणा:

वर्ष 1950-1960 में शिकागो विश्वविद्यालय के मानव विज्ञानी रेडफ़ील्ड अपने सहयोंगी मिल्टन सिंगर, राबर्ट तथा उनके शोध छात्र मैक्किम मैरिएट, कोहन आदि सम्मिलित सहयोग में सभ्यताओं की विद्वतापूर्ण जानकारी के लिए प्रयत्नशील थे। उन्हीं दिनों प्रोफेसर विद्यार्थी रेडफ़ील्ड के संरक्षण में अपना शोधकार्य कर रहे थे। साथ ही शिकागो विश्वविद्यालय का मानवशास्त्र का एक विशिष्टदल सभ्यता को परिवार, पड़ोस, उत्सवों तथा अन्य ऐतिहासिक व सामाजिक संदर्भ में देखने का प्रयत्न कर रहा था। प्रोफेसर विद्यार्थी अपने डाक्ट्रेट शोध कार्य के लिए भारत के चर्चित तीर्थ स्थल(गया) के परिवेश में पवित्र-संकुल की अवधारणा की जांच कर रहे थे। उनका शोध प्रबंध एक पुस्तक के रूप में भी (1965,1977) प्रकाशित हो चुका है।

रेडफ़ील्ड,सिंगर,कोहन, मैरिएट जैसे अमेंरिकी मानववेत्ताओं ने भारतीय सभ्यता का अध्ययन करने में सैद्धान्तिक और पद्धतिशास्त्रीय समस्याओं के प्रति गहरा लगाव प्रदर्शित किया है। रेडफ़ील्ड (1953)[4]एक सभ्यता के अध्ययन हेतु अपने प्रस्तावों का विकास वृहद एवं लघु परंपराएं सांस्कृतिक विशेषज्ञ जीवन-शैली सांस्कृतिक अनुष्ठान तथा सांस्कृतिक माध्यम जैसी अवधारणाओं से करते हैं। संदर्भ-बिन्दु के रूप में बाहर से आने वाले उच्च एवं बौद्धिक प्रभावों को बृहद परंपरा तथा गांव के अंदर उपस्थित रहने वाले प्रभावों को लघु परंपरा कहा जाता है। वे सांस्कृतिक विशेषज्ञ शब्द का प्रयोंग उन संगठित समूहों के लिए करते हैं,जो वृहद एवं लघु परंपराओं के बीच मध्यस्थता कराते हैं। वे सिंगर के सांस्कृतिक स्त्रोत (नाच-गान, अभिनय, मंत्रोच्चारण का तरीका आदि) की अवधारणाओं से परिचित कराते हैं एवं सांस्कृतिक निरंतरता स्थापित करते हैं।

[4]Redfield, Robert. (1953). the Development of American Anthropology. Press: Chicago.

सभ्यता की परिभाषाओं को रेडफील्ड तीन तरीकों से व्यक्त करते हैं-

सर्वप्रथम रेडफील्ड सभ्यता को वृहद एवं लघु परम्पराओं की एक जटिल सांस्कृतिक संरचना की परिभाषा देते हैं। यह परिभाषा सांस्कृतिक-विषयक ऐतिहासिक स्त्रोतों एवं विकास के स्तरों पर बल देते हुए सभ्यताओं के भूमिका-धारकों को एक विशेष प्रकार के संगठन के रूप परभाषित करती है। जो एक दूसरे के साथ विशेष संबंध रखते हैं। इसमें ऐसे लोग भी सम्मिलित हैं ,जो परंपरा की सीमा का विस्तार करते रहते हैं। तीसरा, रेडफील्ड, सिंगर के साथ मिलकर सभ्यता की परिभाषा प्रस्तावित करते हैं। जो एक विशेष विश्व-दर्शन, लोकाचार, प्रवृत्ति, मूल्य व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यक्तित्व जैसे शब्दों में संयोंजी गयी है।

मिल्टन सिंगर(1955)[5] भारतीय सभ्यता के अध्ययन के लिए रेडफ़ील्ड के कुछ दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। अपने क्षेत्रीय शोधकार्य के दौरान वे रेडफ़ील्ड के सांस्कृतिक विशेषज्ञ की जांच भारतीय परिवेश में करते हैं। उनके द्वारा प्रयुक्त अन्य अवधारणायें हैं - सांस्कृतिक साधन,सांस्कृतिक क्रियान्वयन(निष्पादन), सांस्कृतिक चरण। सिंगर ‘चिंतन की इकाई’ और अवलोकन की इकाई के परस्पर विभेद को सुस्पष्ट करते हैं। इनके अनुसार अवलोकन इकाईयों में प्रार्थना तथा धार्मिक क्रियाए, पठन-पाठन, धार्मिक संस्कारों का कार्यान्वयन (सांस्कृतिक निष्पादन) आदि है।

सांस्कृतिक केन्द्रो (चरणों) को सिंगर ऐसा मानते है जहां सांस्कृतिक निष्पादन सम्पन्न किए जाते है। गांव (क्षेत्र) सांस्कृतिक केंद्र है। गृह का एक भाग मंदिर अन्य स्थल जो किसी पुरोहित के संरक्षण में रहता है। सभी ‘पवित्र स्थल’ है इन्ही के माध्यम से वृहद एवं लघु परंपराए जीवंत रहती है। इस जीवंत का चित्रण रेडफ़ील्ड ने अपने शोध लेख ‘परम्पराओंका सामाजिक संगठन’ में किया है।

[5]http://www.jstor.org/stable/768170?seq=1#page_scan_tab_contents/ accessed on 12/7/2015

उल्लिखित दृष्टिकोण के आधार पर, सिंगर भारतीय सभ्यता के मामले में चार संकल्पनाए प्रस्तावित करते हैं-

1.वृहद परंपरा, लघु परंपरा के साथ सांस्कृतिक रूप में निरंतरता बनाये रहती है। यह विविध क्षेत्रो, गांवो एवं जातियों के मध्य पायी जाती है।

2.यह सांस्कृतिक निरंतरताअधिकांशतःभारतीयों द्वारा अपनाए गए एक सामान्य सांस्कृतिक चेतना की उपज थी तथा यह मानसिक दृष्टिकोण एवं लोकाचार है।

3. यह सांस्कृतिक चेतना भारत में कुछ ऐसी विशेष प्रक्रियाओं एवं कारको की सहायता से निर्मित हुई है। जो अन्य प्राथमिक सभ्यताओ में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है अर्थात पूजा के निर्दिष्ट बिन्दुओं के रूप में पवित्र पुस्तकें एवं पवित्र वस्तुयें, ब्राह्मणों का एक विशेष वर्ग जो पवित्र धर्म-ग्रंथों का पाठ करने वाला, व्याख्या करने का प्राधिकार रखते है। व्यवसायिक कथा-वाचक, पवित्र-केन्द्रों, भूगोल, मंदिरो, तीर्थ-स्थलों, तीर्थ-समाधियों इत्यादि प्रमुख व्यक्तित्व दीर्घ परंपरा एवं जन समूह साथ अपनी पहचान के द्वारा एक दूसरे के बीच मध्यस्थता करते है।

4. यह सांस्कृतिक निरंतरता इतनी व्यापक है कि प्रगति एवं आधुनिकीकरण की स्वीकृति भी प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती है।

1.2 मानव विज्ञान में नगरीय अध्ययन:

प्रोफेसर विद्यार्थी ने भारत में नगरों का अध्ययन मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से किया है। इसी विषय पर उन्होनेंशिकागो विश्वविद्यालय में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। उनका शोध विषय था "हिन्दू सभ्यता में पौराणिक नगर का योंगदान"। इस शोध कार्य को रेडफ़ील्ड,सिंगर और मैक्किम मेंरिएट ने सराहा था। इसी विषय पर विद्यार्थी [6] ने *"Sacred Complex In Hindu Gaya"* नाम से एक पुस्तक लिखी। जिसका प्रकाशन 1966 और 1980 में हुआ।

उपर्युक्त पुस्तक में यह बताने का प्रयास किया गया है कि हिन्दू सभ्यता को वृहद एवं लघु परंपरा की अवधारणाओं से किस प्रकार समझा जा सकता है। गया नगर वृहत परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जबकि वहां पर पवित्र अनुष्ठान करने के लिये देश के विभिन्न भागों से लोग आते हैं। अधिकांशतः ऐसे लोग लघु परंपरा वाले होते हैं। इस प्रकार जन साधारण का संपर्क श्रेष्ठजनो से होता है। इसी सुमेंलन को विद्यार्थी ने संकुल की संज्ञा दी है।

विद्यार्थी के मतानुसार हिन्दू तीर्थ स्थल या पवित्र नगर (गया) का अध्ययन रेडफील्ड एवं सिंगर द्वारा कुछ अवधारणाओं एवं प्राकल्पनाओं के परीक्षण हेतु एक सही अध्ययन क्षेत्र प्रस्तुत करता है। संक्षेप में क्षेत्रीय कार्य एवं ग्रंथो से एकत्रित की गयी जानकारी हिन्दू सभ्यता के बारे में उपरोक्त बताए गए प्राकल्पनाओं के सहारे विश्लेषित की गयी है। गया के पवित्र भूगोल को संरचित करने वाली पवित्र केन्द्रों का वर्णन के लिए कुछ विशेष वर्णात्मक शब्दों का उपयोंग आवश्यक है, जैसे पवित्र समूह,पवित्र खण्ड तथा पवित्र क्षेत्र, पवित्र संकुल के कुछ तत्वों के विषय क्षेत्र स्पष्ट करने के लिए 'स्थानीय'क्षेत्रीय तथा व्यापक प्रकृति वर्णन करने

---

6 http://www.ebay.com/itm/The-sacred-complex-in-Hindu-Gaya-L-P-Vidyarthi-1966-ID-00427-/301664872084/ accessed on 12/7/2015

के लिए ‘लोक सामंतवादी’ एवं ‘श्रमजीवी’ पुरोहित जैसे शब्द में सभी एक पवित्र संकुल के प्रतिमान के वर्णन करने के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते है।

तीर्थ नगर (गया) के अध्ययन में कार्यकारी उपकल्पनाएं निम्न हैं-

1. पवित्र केन्द्र, पवित्र अनुष्ठान, एवं पवित्र विशेषज्ञ किसी हिन्दू तीर्थ स्थल का पवित्र संकुल, वृहत एवं लघु परम्पराओं के बीच निरंतरता समझौता एवं मिश्रण को प्रतिबिम्बित करती है।

2.किसी तीर्थ स्थल के पवित्र विशेषज्ञ एक विशिष्ट जीवनशैली का निर्वाह करते हैं। तथा किन्ही विशेष ग्रंथो को लोकप्रिय बनाकर तीर्थ-यात्राओं का आयोंजन करके, धार्मिक कृत्यो, पुरोहित द्वारा वृहत परंपरा के कुछ विशेष तत्वों को भारत की ग्रामीण जनसंख्या तक प्रसारकिया जाता है।

3.सामान्यतः पवित्र संकुल (विशेष रूप से पवित्र विशेषज्ञ) रूपान्तरण एवं बदलाव की प्रक्रिया में है।

1.3पवित्र संकुल के मुख्य बिंदुओं की व्याख्या :

- **पवित्र केंद्र :** वह स्थान विशेष जहां पर किसी क्षेत्र के विशिष्ट धार्मिक तत्व अथवा पवित्र संकुल सबसे अधिक मात्रा में पाए जातें है, उसे पवित्र केंद्र के नाम से जाना जाता है।
- **पवित्र क्षेत्र :**पवित्र क्षेत्र के अंतर्गत प्रकार्यात्मक रूप में समाकलित एवं संरूपित धार्मिक विशेषज्ञो के समुच्चय को पवित्र संकुल कहते हैं। यह समुच्चय किसी एक तत्व के साथ इस प्रकार अर्थपूर्ण ढंग से मिला होता है कि वह एक अन्तर सम्बन्धित साकार रूप प्रदान करता है। किसी धार्मिक पर्व से संबंधित कर्म-कांड, पूजा-पद्धति, मंत्रोंच्चारण,विश्वास नियम आदि से मिलकर उस पर्व के पवित्र संकुल की रचना होती है।

- **पवित्र पदार्थ :**पवित्र अनुष्ठान में प्रयुक्त वस्तुएं, प्रसाद सामग्री, देवी देवताओं की-प्रतिमाएं तथा कला, विभिन्न संस्कार एवं यज्ञ में प्रयुक्त सभी वस्तुएं पवित्र पदार्थों की श्रेणी में आते हैं।
- **पवित्र वृक्ष :**आदि काल से ही वृक्षों के पूजन की प्रथा चली आ रही है।समाजों में अलग अलग श्रेणी में रखा गया है तथा इनकी पूजा की जाती -अलग वृक्षों कों अलग- है। इन वृक्षों की पवित्रता के बारें में अनेक मिथक जुड़े हुए हैं।
- **बलि :** सामान्य रूप में बलि से तात्पर्य किसी पवित्र संदर्भ में पशुओं को मारने अथवा वस्तुओं के नाश करने या चढ़ावे के रूप में अर्पित करने से है। प्रथाओं की एक विशेषता रही है कि इसमें देवताओं को कोई ऐसी वस्तु चढ़ाई जाती है जिसे समाज के व्यक्ति महत्वपूर्ण समझते हैं। इसमें भोजन, घरेलू वस्तु, नारियल अथवा किसी पशु या मानव का जीवन भी हो सकता है।

1.4 विषय का चुनाव: गोरखधाम एक पवित्र स्थल होने के साथ-साथ ऐतिहासिक एवं सामाजिक रूप से योंगी जनों की तपस्थली के नाम से भी प्रसिद्ध है। भारत में विभिन्न धर्मों के लोग पाये जाते हैं, इन सभी में धर्मों में हिन्दू धर्म के लोगों की संख्या अधिक है। हिन्दू धर्म के पवित्र संकुलों में गोरखधाम भी एक प्रमुख पवित्र संकुल है।मेरे संज्ञान में किसी मानवशास्त्री ने इस स्थल पर शोधकार्य नहीं किया है। इसलिए मेरे द्वारा इस विषय का चुनाव किया गया है।

1.5 अध्ययन का महत्व :मेरा अध्ययन गोरखधाम के बृहद परंपरा के पवित्र संकुल पर है। गोरखधाम का उल्लेख कई हिन्दू धार्मिक पौराणिक कथाओं में देखने को मिलता है। इस अनुसंधान को पवित्र भूगोल, पवित्र अनुष्ठान और पवित्र विशेषज्ञ की अवधारणा से परखना और वर्तमान के बदलते परिवेश में हुए परिवर्तनों की प्रासंगिकता को समझना है। इसका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि उत्तर प्रदेश में पवित्र संकुल काशी, (सिन्हा और

सरस्वती1969) तथा अयोध्या (उपाध्याय1967) केन्द्रों का अध्ययन किया गया है। लेकिन गोरखधाम पवित्र संकुल का अध्ययन मानववैज्ञानिक दृष्टिकोंण से अब तक किसी ने नहीं किया है।पवित्र संकुल के नाथ योगी की भूमिका सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में भी है।जो की मेरे शोध का अहम् बिंदु है।

इस पवित्र संकुल में उपस्थित विशेषज्ञो,दुकानदारों, तीर्थयात्रियों के क्रियाकलापों आदि को भी समझने कि कोशिश की गयी है। सबसे महत्वपूर्ण बिंदु इस संकुल के पवित्र विशेषज्ञ जो अपना वंशज नाथ सम्प्रदाय को मानते हैं, ना कि किसी जाति विशेष को।मैंने इन सभी मुख्य बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए अपना शोध कार्य किया है ।

1.6 अध्ययन के उद्देश्य:किसी भी शोध के उद्देश्य उसकी प्रासंगिकता और सामान्यीकरण पर निर्भर करतें हैं।आज के समय में जब पूरा विश्व वैज्ञानिक तकनीकों का इस्तेमाल कर हर असंभव कार्य को भी संभव कर रहाहै। इसके बावजूद आज भी लोगों की धर्म के प्रति आस्था कम नहीं है। लोग धार्मिक और पवित्र स्थानों में धार्मिक कृत्य करते हैं। तथा अपनी सफलता व विफलता का श्रेय अपने इष्ट देवी -देवता को ही मानते हैं।

इसलिए गोरखधाम पवित्र संकुल के अध्ययन हेतु मेरे मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं-

1.विद्यार्थी द्वारा प्रतिपादित पवित्र संकुल प्रविधि को गोरखधाम मंदिर पर परखना।

2. समग्रता के दृष्टिकोण से गोरखधाम मंदिर का धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक,शैक्षणिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मानवशास्त्रीय विश्लेषण।

3.पवित्र संकुल अवधारणा की वर्तमान में प्रासंगिकता को जानना एवं समझना।

1.7 अध्ययन की परिकल्पनाएं:

1.(a^0) पवित्र संकुल पवित्र भूगोल,पवित्र विशेषज्ञ,पवित्र अनुष्ठान का संश्लेषण है।

(a^1) पवित्र संकुल पवित्र भूगोल, पवित्र विशेषज्ञ,पवित्र अनुष्ठान का संश्लेषण **नहीं** है।

2.(a^0) पवित्र संकुल गोरखधाम का समग्र मानव शास्त्रीय विश्लेषण करने में समर्थ है।

(a^1) पवित्र संकुल गोरखधाम का समग्र मानव शास्त्रीय विश्लेषण करने में समर्थ **नहीं** है।

1.8 अध्ययन की सीमाएं :

- **समय की समस्या :**एक गुणवत्ता पूर्ण शोध के लिए समय की पर्याप्तता होनी चाहिए तथा आवश्यक है। यह लघु शोध प्रबंध एक निश्चित और कम समय में किया गया है।
- **लोगों से वार्ता स्थापित करने में समस्या :**पवित्र संकुल के विशेषज्ञों का साक्षात्कार लेने के लिये कई दिनों तक प्रयास किए गए लेकिन कोई कुछ बताने को ही तैयार नहीं हो रहे थे अंतत: उन लोगों में विश्वास की भावना जिससे वह बात करने के लिए तैयार हुये और फिर उनका साक्षात्कार लिया।
- **दूरीकी समस्या:**पवित्र संकुल निवास स्थान से दूर होने के कारण समय की बर्बादी होती थी क्योंकि प्रतिदिन आने जाने में ही काफी समय लग जाता था।
- **सूचनादाता से मिलने की समस्या:**पवित्र संकुल में उपस्थित विशेषज्ञ से मिलने के लिए समय लेना पड़ता था, इसके बावजूद अगर वे उस समय व्यस्त हो तो काफी समय तक इन्तजार करना पड़ता था।

1.9 क्षेत्र परिचय :

उत्तरप्रदेश: उत्तरप्रदेश भारत के उत्तर में स्थित है। यह देश का सबसे बड़ा (जनसंख्या के आधार पर) राज्य है। यह राज्य पूर्वोत्तर में नेपाल, तिब्बत, दक्षिण में मध्यप्रदेश,पश्चिम में हरियाणा, दिल्ली,राजस्थान तथा पूर्व में बिहार से घिरा है। यह 2,38,566 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। लखनऊ प्रदेश की प्रशासनिक विधायिका राजधानी और इलाहाबाद न्यायिक राजधानी है। प्रदेश के अन्य महत्त्वपूर्ण शहर, आगरा, अलीगढ़, अयोंध्या, बरेली, वाराणसी (बनारस), गाजीपुर,मेंरठ,गोरखपुर, फैजाबाद, गाजियाबाद इत्यादि है। इसके पड़ोसी राज्य हैं उत्तराखंड, हिमांचल-प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्य-प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार इत्यादि उत्तर-प्रदेश की भौगोलिक स्थिति 23'52 उत्तरी अक्षांश से 30'25 तथा 773 पूर्वी देशांतर से 84'39 पूर्वी देशांतर है।

क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किमी, राज्य की जनसंख्या 2011 जनगणना के अनुसार 19,95,81,477 पुरुष 10,45,96,415, महिला 949,85,062 तथा साक्षारता दर 69.72 प्रतिशत (2011) पुरुष 79.24 प्रतिशत महिला 59.26 प्रतिशत। प्रदेश में जिलों की संख्या 75 व तहसील 312हैं

उत्तरप्रदेश की जनगणना रिपोर्ट :

जनसंख्या रिपोर्ट (2011 के अनुसार)		
1.	कुल जनसंख्या Actual Population	199,812,341
2.	ग्रामीण जनसंख्या Rural Population	131,658,339
3.	शहरी जनसंख्या urban Population	34,539,582
4.	पुरुष संख्या Male Population	104,480,510
5.	महिला संख्या Female Population	95,331,831
6.	कुल साक्षारता दरLiteracy rate	67.68 %
7.	महिला साक्षारता दर Female Literacy	57.18 %
8.	पुरुष साक्षारता दर Male Literacy	77.28 %
9.	क्षेत्र (किमी वर्ग में) Area(Km^2)	240,928
10.	घनत्व Density/km2	829
http://www.census2011.co.in/census/state/uttar+pradesh.html		

- ## भौगोलिक दृष्टि से उत्तरप्रदेश की पृष्ठभूमि :

भारत के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित उत्तर प्रदेश के उत्तरी एवं पूर्वी भाग की तरफ़ पहाड़ तथा पश्चिमी एवं मध्य की ओर मैदानी भाग हैं। उत्तर प्रदेश को मुख्यतःतीन क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है-

- **उत्तर में हिमालय का क्षेत्र** : यह क्षेत्र बहुत ही प्रतिकूल भू-भाग का है और अब ये उत्तरांचल के अन्तर्गत आता है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 300 से 5000 मीटर तथा ढलान 150 से 600 किलोमीटर तक है।

उत्तरप्रदेश में गोरखपुर को दर्शाता मानचित्र (satelight map)

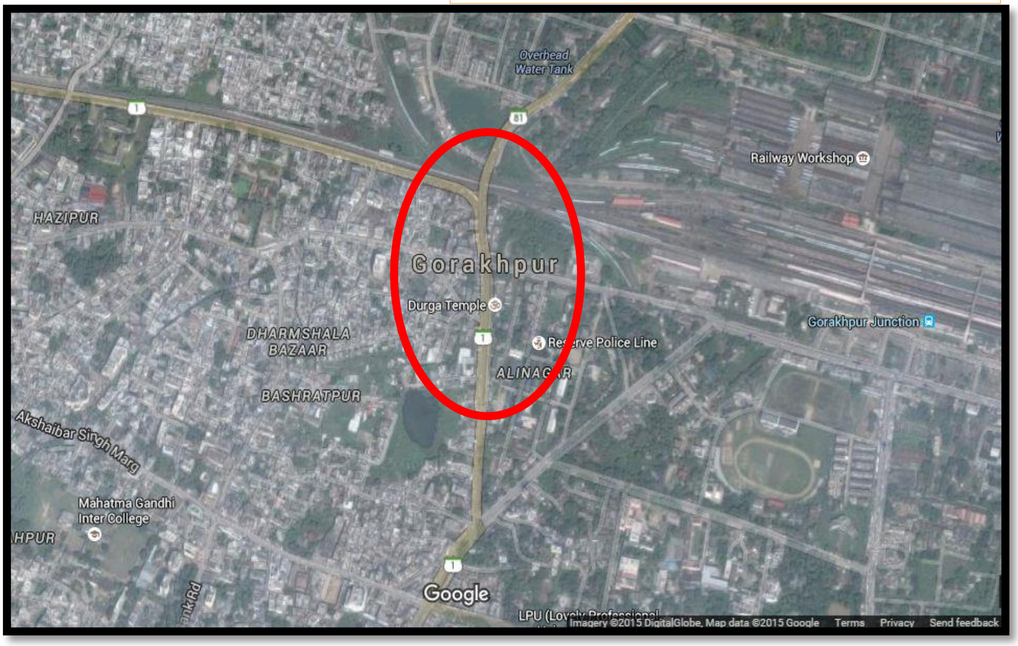

- **मध्य में गंगा का मैदानी भाग** : यह क्षेत्र अत्यन्त ही उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का क्षेत्र है। इसकी स्थलाकृति सपाट है। इस क्षेत्र में अनेक तालाब, झीलें और नदियाँ हैं। इसका ढलान 2 किलोमीटर तक है।

- **दक्षिण का विन्ध्याचल क्षेत्र** -यह एक पठारी क्षेत्र है,तथा इसकी स्थलाकृति पहाड़ों, मैंदानों और घाटियों से घिरी हुई है। इस क्षेत्र में पानी कम मात्रा में उपलब्ध है।यहां की जलवायु मुख्यतः उष्णदेशीय मानसून की है परन्तु समुद्र तल से ऊँचाई बदलने के साथ इसमें परिवर्तन होता रहता है। उत्तर प्रदेश 8 राज्यों उत्तराखण्ड, हिमाचलप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार से घिरा राज्य है।

1.10 गोरखपुर क्षेत्र का परिचय :

अनुसंधान का क्षेत्र गोरखपुर भारत का एक प्रसिद्ध शहर है। गोरखपुर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय नेपाल के साथ सीमा के पास स्थित है। धार्मिक दृष्टिकोण से यह एक प्रमुख केन्द्र के रूप में मशहूर है और यहां बौद्ध, हिन्दू, मुस्लिम, जैन और सिख सन्तोंकी साधना स्थल भी है।गोरखपुर का नाम मध्ययुगीन सन्त गोरखनाथ के नाम पर रखा गया है।

यहां का प्रसिद्ध गोरखनाथ मन्दिर अभी भी नाथ सम्प्रदाय की पीठ है। यह महान सन्त परमहंस योंगानन्द जी का जन्म स्थान भी है। इस शहर में बौद्धों के घर, इमामबाड़ा, 18वीं सदी की दरगाह और हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों का प्रमुख प्रकाशन संस्थान गीता प्रेस आदि ऐतिहासिक

स्थल हैं।

गोरखपुर राप्ती और रोहिणी दो नदियों के तट पर बसा हुआ है। नेपाल से निकलने वाली इन दोनों नदियों में सहायक नदियों का पानी एकत्र हो जाने से कभी-कभी इस क्षेत्र में भयंकर बाढ़ भी आ जाती है। यहां एक बहुत बड़ा तालाब भी है जिसे रामगढ़ ताल कहते हैं।

यह बारिस के दिनों में अच्छी खासी झील के रूप में परिवर्तित हो जाता है जिससे आस-पास के गांवों की खेती के लिये पानी की कमी नहीं रहती। यहां एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है जो कुशीनगर के नाम से विख्यात है, जहांबुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था।

यह स्थान इस शहर से अधिक दूर नहीं है। पर्यटक यहां से आसानी से कुशीनगर पहुच सकते हैं।इस शहर का प्राचीन ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व इसके भूगोल के कारण भी है। प्राचीन काल में यहां के समीपवर्ती जंगलों में साधु-सन्त आश्रमों में रहते थे और वे देश के विभिन्न भागों से आये लड़कों को योंग व अन्य विद्यायें सिखाया करते थे। त्रेता युग के राजकुमार राम व उनके भाई लक्ष्मण ने भी इन्हीं आश्रमों में रहकर शिक्षा ग्रहण की थी।

- **गोरखपुर जिला जनगणना रिपोर्ट :**

जनसंख्या रिपोर्ट (**के अनुसार**)		2011	2001
1.	कुल जनसंख्या Actual Population	4,440,895	3,769,456
2.	बच्चों कीसंख्या (0-6 वर्ष) child Population	628,442	694,213
3.	लिंगानुपात (per 1000)	950	960
4.	पुरुष संख्या Male Population	2,277,777	1,923,197
5.	महिला संख्या FemalePopulation	2,163,118	1,846,259
6.	कुल साक्षारता दरLiteracyrate	70.83%	58.49
7.	महिला साक्षारता दर Female Literacy	59.36%	42.88
8.	पुरुष साक्षारता दर Male Literacy	81.80%	73.57
9.	क्षेत्र (किमी वर्ग में) Area(Km^2)	3,321	3,321
10.	घनत्व Density/km2	1,337	1,135

http://www.census2011.co.in/census/district/559-gorakhpur.html

- **अर्थव्यवस्था :**गोरखपुर महानगर की अर्थव्यवस्था सेवा उद्योग पर आधारित है।-यहां के लोगों को बेहतर शिक्षा, चिकित्सा और अन्य सुविधायें, गांवों की तुलना में ज्यादा बेहतर है। जिस कारण लोग गाँव से शहर की ओर पलायन कर रहें है। एक बेहतर भौगोलिक स्थिति और उप-शहरी पृष्ठभूमि के लिये शहर की अर्थव्यवस्था सेवा में वृद्धि पर निश्चित रूप से टिकी हुई है।

  यह शहर हाथ से बुने कपड़ो के लिये भी प्रसिद्ध है यहां का टेराकोटा उद्योग उत्पादन प्रमुख है। अधिक से अधिक व्यावसायिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों की शाखायें भी हैं। विशेष रूप में आई०सी०आई०सी०आई०, एच.डी.एफ.सी. और आई०डी०बी०आई० बैंक जैसे निजी बैंकों ने इस शहर में अच्छी जगह बना रखी है।

शहर के भौगोलिक केन्द्र गोलघर में कई प्रमुख दुकानों, होटलों, बैंकों और रेस्तराँ के रूप में बलदेव प्लाजा शॉपिंग मॉल' शामिल हैं। इसके अतिरिक्त बख्शीपुर में भी कई शॉपिंग माल हैं। यहां के सिटी माल में 3 स्क्रीन वाला एस०आर०एस० मल्टीप्लेक्स भी है जो फिल्म प्रेमियों के लिये एक आकर्षण है। यहां एक वाटर पार्क भी है।

- **गोरखपुर की सांस्कृतिक स्थिति :**

गोरखपुर शहर की संस्कृति अपने आप में अद्भुत है। यहां परम्परा और संस्कृति का संगम प्रत्येक दिन देखा जा सकता है। जब आप का गोरखपुर शहर में हो तो जीवन और गति का सामंजस्य यहां आप भली-भांति देख सकते हैं। सुन्दर और प्रभावशाली लोक परम्पराओं का पालन करने में यहां के निवासी नियमित आधार पर अभ्यस्त हैं। यहां के लोगों की समृद्ध संस्कृति के साथ लुभावनी दृश्यावली का अवलोकन कर आप मन्त्रमुग्ध हुए बिना नहीं रह सकते। गोरखपुर की महिलाओं की बुनाई और कढ़ाई,लकड़ी की नक्काशी, दरवाजों और

उनके शिल्प-सौन्दर्य, इमारतों के बाहर छज्जों पर छेनी-हथौड़े का बारीक कार्य आपका मन मोह लेगा।

गोरखपुर में संस्कृति के साथ-साथ यहां का जन-जीवन बड़ा शान्त और मेंहनती है। देवी-देवताओं की छवियों,पत्थर पर बने बारीक कार्य देखते ही बनते हैं। ब्लॉकों से बनाये गये हर मन्दिर को सजाना यहां की एक धार्मिक संस्कृति है। गोरखपुर शहर में स्वादिष्ट भोजन के कई विकल्प हैं। रामपुरी मछली पकाने की परम्परागत सांस्कृतिक पद्धति और अवध के काकोरी कबाब की थाली यहां के विशेष व्यंजन हैं।

गोरखपुर संस्कृति का सबसे बड़ा भाग यहा के लोक-गीतों और लोक-नृत्यों की परम्परा है। यह परम्परा बहुत ही कलात्मक है, और गोरखपुर संस्कृति का ज्वलंत हिस्सा है। यहां के गायन और नृत्य भी प्रसिद्ध हैं । वे विभिन्न अवसरों पर नृत्य और लोक-गीतों का प्रदर्शन विभिन्न त्यौहारों और मौसमों में वर्ष के दौरान करते है। बारह महीने बरसात और सर्दियों में रात के दौरान आल्हा,कजरी,कहरवा और फाग गाते हैं। गोरखपुर के लोग हारमोनियम, ढोलक, मंजीरा, मृदंग, नगाड़ा, थाली आदि का संगीत-वाद्ययन्त्रों के रूप में भरपूर उपयोंग करते हैं। सबसे लोकप्रिय लोक-नृत्य कुछ त्यौहारोंव मेंलों के विशेष अवसर पर प्रदर्शित किये जाते हैं। विवाह के मौके पर गाने के लिये गोरखपुर की विरासत और परम्परागत नृत्य उनकी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। गोरखपुर प्रसिद्ध बिरहा गायक बलेसर, भोजपुरी लोकगायक मनोज तिवारी, मालिनी अवस्थी, मैनावती आदि की कर्मभूमि रहा है।

- **दर्शनीय स्थल:**विश्व में जितना अनोखा और सुन्दर भारत है, भारत में उतना ही अनोखा व आकर्षक उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में गोरखपुर पर्यटन परिक्षेत्र एक विस्तृत भू-भाग में फैला हुआ है। इसके अंतर्गत गोरखपुर- मण्डल, बस्ती-मण्डल एवं आजमगढ़-मण्डल के कई जनपद है। अनेक पुरातात्विक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं

प्राकृतिक धरोहरों को समेंटे हुए इस पर्यटन परिक्षेत्र की अपनी विशिष्ट परम्परायेंहैं। सरयू, राप्ती, गंगा, गण्डक, तमसा, रोहिणी जैसी पावन नदियों के वरदान से अभिसंचित, भगवान बुद्ध, तीर्थकर महावीर, संत कबीर, गुरु गोरखनाथ की तपःस्थली, सर्वधर्म-सम्भाव के संदेश देने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों के देवालयों और प्रकृति द्वारा सजाये-संवारे पक्षी-विहार एवं अभ्यारण्यों से परिपूर्ण यह क्षेत्र सभी वर्ग के पर्यटकों का आकर्षण-केन्द्र है।

- **गोरखनाथ मन्दिर:**गोरखपुर रेलवे स्टेशन से 4 किलोमीटर दूरी पर नेपाल रोड स्थित नाथ सम्प्रदाय के संस्थापक परम सिद्ध गुरु गोरखनाथ का अत्यन्त सुन्दर भव्य मन्दिर स्थित है। यहां प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर खिचड़ी-मेंला का आयोंजन होता है, जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालु/पर्यटक सम्मिलित होते हैं। यह एक माह तक चलता है।

- **विष्णु मंदिर:** यह मेंडिकल कॉलेज रोड पर रेलवे स्टेशन से3 किलोमीटर की दूरी शाहपुर मोहल्ले में स्थित है। इस मन्दिर में 12वीं शताब्दी की पत्थर से निर्मित भगवान विष्णु की विशाल प्रतिमा स्थापित है। यहां दशहरे के अवसर पर पारम्परिक रामलीला का आयोंजन होता है।

- **गीताप्रेस:** रेलवे स्टेशन से4 किलोमीटर दूरी पर रेती चौक के पास स्थित गीताप्रेस में सफ़ेद संगमरमर की दीवारों पर श्रीमद्भगवदगीता के सम्पूर्ण 18 अध्याय के श्लोक उत्कीर्ण है। गीताप्रेस की दीवारों पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एवं भगवान श्रीकृष्ण के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं की 'चित्रकला' प्रदर्शित हैं। यहां पर हिन्दू धर्म की दुर्लभ पुस्तकें, हैण्डलूम एवं टेक्सटाइल्स वस्त्र सस्ते दर पर बेचे जाते हैं। विश्व प्रसिद्ध पत्रिका कल्याण का प्रकाशन यहीं से किया जाता है।

- **विनोद वन:** रेलवे स्टेशन से9 किलोमीटर दूर गोरखपुरकुशीनगर मार्ग पर अत्यन्त सुन्दर -पूर्ण मनोरंजन केन्द्र स्थित है जहाँ बारहसिंघे व अन्य हिरण (पिकनिक स्पॉट), अजगर,

खरगोश तथा अन्य वन्य पशुविचरण करते हैं। यहीं पर प्राचीन बुढ़िया माई का पक्षी-स्थान भी है, जो नववर्ष,नवरात्रि तथा अन्य अवसरों पर कई श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

- **गीतावाटिका :**गोरखपुर-पिपराइच मार्ग पर रेलवे स्टेशन से 3 किलोमीटर दूरी पर स्थित गीतावाटिका में राधा-कृष्ण का भव्य मनमोहक मन्दिर स्थित है। इसकी स्थापना प्रख्यात समाजसेवी हनुमान प्रसाद पोद्दार ने की थी।
- **रामगढ़ ताल :**रेलवे स्टेशन से 5 किलोमीटर पर 1700 एकड़ के विस्तृत भू-भाग में रामगढ़ ताल स्थित है। यह पर्यटकों के लिए अत्यन्त आकर्षक केन्द्र है। यहां पर जल क्रीड़ा केन्द्र, बौद्ध संग्रहालय, तारा मण्डल, चम्पादेवी पार्क एवं अम्बेडकर उद्यान आदि दर्शनीय स्थल हैं।
- **इमामबाड़ा :**गोरखपुर नगर के मध्य में रेलवे स्टेशन से 2 किलोमीटर दूरी पर स्थित इस इमामबाड़ा का निर्माण हज़रत बाबा रोशन अलीशाह की अनुमति से सन् 1717 ई० में नवाब आसफुद्दौला ने करवाया। उसी समय से यहां पर दो बहुमूल्य ताजियां एक स्वर्ण और दूसरा चांदी का रखा हुआ है। यहां से मुहर्रम का जुलूस निकलता है।
- **प्राचीन महादेव झारखंडी मन्दिर :**गोरखपुर शहर से देवरिया मार्ग पर कूड़ाघाट बाज़ार के निकट शहर से 4 किलोमीटर पर यह प्राचीन शिव स्थल रामगढ़ ताल के पूर्वी भाग में स्थित है।
- **मुंशी प्रेमचन्द उद्यान :**गोरखपुर नगर के मध्य में रेलवे स्टेशन से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह मनोरम उद्यान प्रख्यात साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द के नाम पर बना है। इसमें

प्रेमचन्द्र के साहित्य से सम्बन्धित एक विशाल पुस्तकालय निर्मित है तथा यह उन दिनों का द्योतक है जब मुंशी प्रेमचन्द गोरखपुर में एक स्कूल टीचर थे।

- **सूर्यकुण्ड मन्दिर :**गोरखपुर नगर के एक कोने में रेलवे स्टेशन से 4 किलोमीटर दूरी पर स्थित ताल के मध्य में स्थित इस स्थान में के बारे में यह विख्यात है कि भगवान श्री राम ने यहाँ पर विश्राम किया था जो कि कालान्तर में भव्य सुर्यकुण्ड मन्दिर बना। दसएकड़ में फैला है। ऐसा माना जाता है कि गुरु गोरखनाथ ने भारत का भ्रमण किया और अनेकों ग्रन्थों की रचना की। गोरखनाथजी का मंदिर उत्तर प्रदेश के गोरखपुर नगर में स्थित है।

1.12गोरखधाम मंदिर :ग्यारहवीं से बाहरवीं शताब्दी के नाथ जिले का नाम गोरखपुर पड़ा है। गुरु गोरखनाथजी के नाम से ही नेपाल के गोरखाओं ने नाम पाया। नेपाल में स्थित गोरखा जिले का नाम भी इसी से पड़ा है। गोरखपुर भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक जिला है।जिलेका मुख्यालय गोरखपुर है।यह मंदिर मुख्य रूप योंगियों अर्थात नाथ सम्प्रदाय के लिए प्रसिद्ध है।यह नाथ संप्रदाय का प्रमुख केंद्र है।

हिन्दू धर्म,दर्शन, आध्यात्म और साधना के अंतर्गत विभिन्न संप्रदायों और मत-मतान्तरों में नाथ-संप्रदायका प्रमुख स्थान है।सम्पूर्ण देश में फैले नाथ-सम्प्रदाय के विभिन्न मंदिरों तथा मठों की देख -रेख यही से होती है।‘नाथ-संप्रदाय के लोगों की ऐसी मान्यता है किसच्चिदानंद शिव के ही साक्षात् स्वरुप हैं गोरखनाथ जी जो सतयुग में पेशावर (पंजाब), त्रेता युग में गोरखपुर, द्वापर युग में हरमुज (द्वारिका), के पास तथा कलयुग में गोरखमधी, नामक स्थानों में आविर्भूत हुए। जिन्होंने चारों युगों में विद्यमान एक अनियोंजित अमर महायोगी के रूप में एशिया के विशाल भू-खंड तिब्बत, मंगोलिया, कंधार, नेपाल, सिंघल, तथा सम्पूर्ण भारत वर्ष को योंग से कृतार्थ किया।

- **गोरखनाथ मंदिर का निर्माण:**

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो गोरखनाथ मंदिर (गोरखपुर) में प्राचीन काल से ही अनवरत योंग-साधना का क्रम चलता आ रहा है।ग्रंथो और कथाओं में यह उल्लेख है कि ज्वाला देवी के स्थान से परिभ्रमण करते हुए 'गोरक्षनाथ जी ने आकर राप्ती के तटवर्ती क्षेत्र में तपस्या की थी,और इसी स्थान पर समाधि लगायी थी,जहां वर्तमान में 'गोरखनाथ मंदिर स्थित है प्रारंभ में यह स्थान एक जन-शून्य तपोवन के रूप में रहा जहां यों गियों के निवास के लिए सिर्फ कुछ छोटे-छोटे मठ ही थे। पर आज हम जिस विशाल और भव्य मंदिर का दर्शन करते हैं,वह ब्रम्हालीन महंत दिग्विजय नाथ जी द्वारा स्थापित किया गया है।

वर्तमान पीठाधीश्वर महंत आदित्यनाथ जी के संरक्षण में गोरखनाथ का पुराना मंदिर विशाल प्रांगण नव-निर्माण की विशालता और व्यापकता में समाहित हो गया है

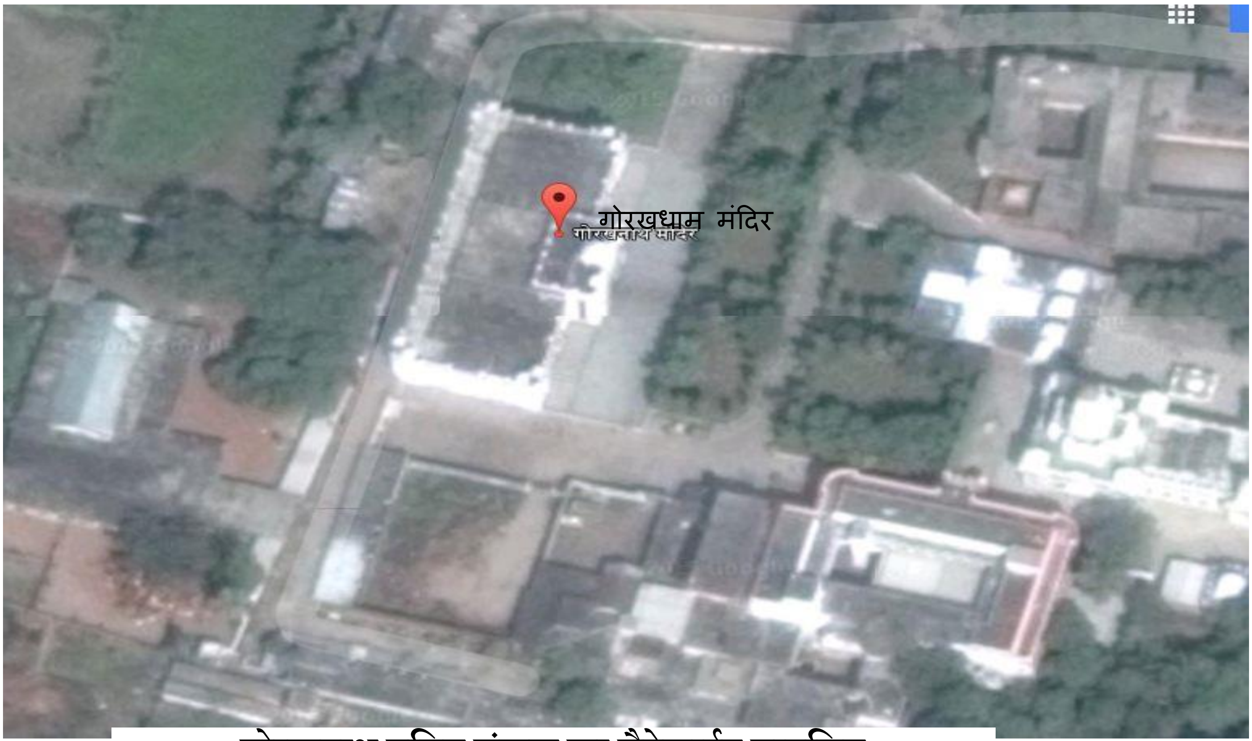

गोरखनाथ पवित्र संकुल का सैटेलाईट मानचित्र

- **मंदिर के महंत :**गुरु गोरखनाथ जी के प्रतिनिधि के रूप में सम्मानित संत को ही महंत की उपाधि दी जाती है। इस मंदिर के प्रथम महंत वरद्राथ जी महाराज कहे जातें हैं,जो गोरखनाथ जी के शिष्य थे। क्रमानुसार वर्तमान में महंत योगी आदित्यनाथ जी गोरक्षपीठाधीश्वर के पद पर विराजमान हैं जो हिदुत्व के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है।योंगी आदित्यनाथ ने में सबसे कम उम्र का सांसद बनने का गौरव प्राप्त किया 1998, योंगी जी ने हिन्दू युवा वाहिनी का गठन भी किया है, जो हिन्दू युवाओं को हिन्दुत्व निष्ठ बनाने पर आधारित गठन है।भारत में जब मुगल कालीन शासन था उसी समय योंग के प्रति लोगों को जागरूक करने में नाथ संप्रदाय एवं गोरखनाथ मंदिर की भूमिका महत्वपूर्ण रही तभी से निरंतर मंदिर के आकार प्रकार के संवर्धन, समलंकरण व मंदिर से सम्बंधित उसी के प्रांगण में स्थित अनेकानेक देवी-देवता नवनिर्माण आदि कार्यों में मंदिर की व्यवस्था - सम्भाल रहे महंतो का प्रमुख योगदान है।

****